thearyasamaj.org

ओ३म्

आर्य्य मार्तण्ड

❖❖ आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान का मुखपत्र – पाक्षिक ❖❖

वैदिक संस्कृति संरक्षण व सामाजिक परिवर्तन का संकल्प – आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान राजा पार्क, जयपुर

वर्ष: 89 अंक 1
अश्विन कृष्णा त्रयोदशी
विक्रम संवत 2071
कलि संवत 5115
5 अक्टूबर 21 अक्टूबर 2014 तक
दयानन्दाब्द 190
सृष्टि सम्वत् 1, 96, 08, 53, 115

मुख्य सम्पादक :
पं. अमर सिंह आर्य, 9214586018
मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान

संपादक मंडल:
स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती, सीकर
श्री ओम मुनि, ब्यावर
श्री विजय सिंह भाटी, जोधपुर
डॉ. सुधीर आर्य, बगरू
आर्य शिरोमणि पं. विनोदी लाल दीक्षित
श्री हरिपाल शास्त्री, अलवर
श्री ओम प्रकाश विद्यावाचस्पति, जयपुर
श्री अर्जुन देव चड्ढा, कोटा
श्रीमती अरूणा सतीजा, जयपुर
श्री सत्यपाल आर्य, अलवर
श्री बृजेन्द्र देव आर्य, अलवर

प्रकाशक:
आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान
राजापार्क, जयपुर
दूरभाष- 0141-2621879
प्रकाशन: दिनांक 1 व 15

पत्र व्यवहार का अस्थाई पता
अमर मुनि वानप्रस्थी
सम्पादक आर्य मार्तण्ड, सेठ का टीला
केडलगंज, अलवर (राज.)
मोबाईल- 9214586018

मुद्रक:
राज प्रिन्टर्स एण्ड एसोशियेट्स,जयपुर

ग्राफिक्स :
भार्गव प्रिन्टर्स, दासकूटा, अलवर
Email: bhargavaprinters@gmail.com
Email:aryamartand@gmail.com
एक प्रति मूल्य : 5 रुपया
सहायता शुल्क : 100 रुपया

तांत्रिक विद्या - ठगों का व्यापार

तंत्र-मंत्र और जादू-टोना के नाम पर लाखों लोग ठगे जाते रहे है। इसका एक कारण यह भी है कि मनुष्य सहज विश्वासी है। इसी का लाभ उठाकर ढोंगी लोग ठगते रहते है। कुछ की पोल जल्दी खुल जाती है कुछ इतने शातिर होते है कि ये सहज पकड़ में नहीं आते। लोगों को भ्रमजाल में फसाये रखते है वे ही लोग धीरे-धीरे इतने सबल व सम्पन्न हो जाते है कि उनका सरकार व कॉरपोरेटड, भूमाफियाओं एवं शराब माफिया व ठेकादारों के उपर अपना प्रभाव बना देते है। वही उन्हें पोषण देते है। इससे गरीब भोली जनता अज्ञानता के कारण ठगाई में आ जाती है। कुछ गुरुडम के नाम पर अपना वर्चस्व बनाये रखते है लाखों की संख्या में उनके शिष्य अनुयायी हो जाते है फिर वो अपना वोट बैंक बनाकर राजनीतिज्ञो को अपने प्रभाव में रखते है। *इन सबकी बुनियाद में अगर हम जाये तो इसके पीछे तांत्रिक विद्या का ढोंग ही है।* कुछ धर्म की आड़ में अपनी दुकान जमाते है। आम जनता को कुछ न कुछ दु:ख तो लगा ही रहता है वे लोग ऐसे दु:खी व्यक्तियों की तलाश कर अपनी दुकान जमाते है। ये लोग भूत प्रेत- कच्चे- कलवे, जिन्न आदि का झाड़ - फूक कर इलाज करते है। सरकारी नोकरी दिलाने का प्रलोभन, तबादला कराने का आश्वासन, घरेलु झगड़ों को सुलझाने का बहाना, गृह कलह, मंत्र-तंत्र आदि का झांसा देते रहते है। जहां तक काम होने का प्रश्न है यह प्रकृति का नियम है अधिकांश लोगों तो सहज लाभ हो ही जाता है। इसमें उनका कोई योगदान नहीं होता। कुछ जिनका काम नहीं होते उनको ये लोग झूटे आश्वासन देकर काबू करे रखते हैं जिन लोगों का सहज कार्य हो जाता है उनके द्वारा प्रचार करवाते है। ये ढोंग बाजी काफी समय से चली आ रही है। इनकी पोल या तो खुल नहीं पाती अगर खुल जाती है तो ये अपने धन बल या राजनीति के दबाव से बचते रहते है।

अभी तक आशाराम जैसे ठग व व्यभिचारी व्यक्ति को सजा नहीं हुई है। रोज टीवी पर नये-नये पाखण्डी अपना प्रचार करते रहते है। इनका भी ऐसा ही हश्र होगा। ये लोग अरबों की सम्पत्ति इसी ढोंग विद्या से इकट्ठा करते है। सरकार या धार्मिक सामाजिक संगठन उक्त ढोंग को रोकने की इच्छा शक्ति नहीं रखते है। अभी हाल की ताजा घटना है कि अलवर शहर में वी.डी. शर्मा (कलकत्ता निवासी) नाम के व्यक्ति ने अपने आपको तांत्रिक घोषित कर अपनी ढोंग की दुकान चलाई। हजारों लोगों के भूत-प्रेत उतारने, घरेलू झगड़े तंत्र विद्या के द्वारा सुलझाने एवं सरकारी नौकरी दिलवाने तथा तबादला करवाने के नाम पर अलवर की जनता का लाखों रूपया ठग लिया। जब पोल खुली तो भाग गया। उनके चक्कर में पार्षद, सरकारी कर्मचारी, प्रोपर्टी डीलर, बड़े व्यापारी आकर लाखों रूपये ठगा बैठे।

वह कमरा मैं बैठा तंत्र मंत्र झाड फूंक करता था एवं एक बोतल में जिन्न होने की बात कहता था। उसका ठगी का तरीका यह था कि लोगों को कमरे में बुलाना वहां तंत्र-मंत्र का माहौल बनाता। उसके बाद लोगों से समस्या पूछता तथा एक लाल कपड़े में 5100/- रूपया रखवाता और रात्रि को पूजा करने का ढोंग करता। कुछ समय बाद जब उसका ढोंग लोगों की समझ में आया तो वह फरार हो गया। कुछ आर्य समाज के लोगों तथा सामाजिक कार्यकर्ताओं एवं पीडिताओं ने पुलिस में रिपोर्ट लिखाई। अभी तक वह फरार है। इसी प्रकार प्रत्येक शहर में ऐसे ढोंगी अपनी दुकान जमाते है और दुनिया को ठगते रहते है। आये दिन ऐसी घटना होती है। सरकार को मंत्र-तंत्र जादू-टोना, झाड़ फूक करने वाले तथा गुरुडम के नाम पर ठगने वालों के खिलाफ सख्त कानून बनाना चाहिए। *-अमरमुनि*

माता और पिता आठ–आठ वर्ष के पुत्र वा कन्याओं को विद्याभ्यास , ब्रह्मचर्य–सेवन और अच्छी शिक्षा किये जाने के लिए विद्वान् और विदुषी स्त्रियों को सौंप दें। वे भी विद्या–ग्रहण करने में नित्य मन लगावें और पढ़ानेवाले भी विद्या और अच्छी शिक्षा देने में नित्य प्रयत्न करें।

thearyasamaj.org

गायत्री मंत्र और महर्षि दयानन्द

गायत्री से बुद्धि शुद्ध होती है और संध्या में सब द्विजों को गायत्री का जाप करना चाहिए। -दयानन्द चरित

संध्योपासना में गायत्री महामंत्र के अर्थ पर विचार करना चाहिए। इस मंत्र में सारे विश्व को उत्पन्न करने वाले परमात्मा का जो उत्तम तेज है उसका ध्यान करने से बुद्धि की मलिनता दूर हो जाती है और धर्माचरण में श्रद्धा ओर योग्यता उत्पन्न होती है। दूसरे किसी मत में प्रार्थना के मंत्रों की ऐसी गहराई और सच्चाई नहीं है। - उपदेश मञ्जरी

गायत्री के चौबीस वर्ण (ण्यं को णिय)

इस प्रकार व्यूहन करके इस मंत्र के 24 वर्णों की स्थिति स्वीकार की है। पूरणे-पिंगल सूत्रानुसार इसकी वृद्धि शास्त्र सम्मत है।

गायत्री विद्या का सर्वसुलभ प्राचीन साहित्य इस पुस्तक में संग्रहीत करने का प्रयत्न किया गया है। इससे यह जाना जा सकता है कि गायत्री विद्या का कितना अधिक महत्व है।

मानसिक कष्ट में गायत्री साधना से तत्काल शान्ति मिलती है। साधक को ऐसा आत्मबल मिलता है। ऐसी आंतरिक दृढ़ता एवं आत्म निर्भरता प्राप्त होती है जिसके कारण अपनी कठिनाइयाँ उसे तुच्छ दिखाई पड़ने लगती है और आत्म विश्वास प्राप्त होता है।

गायत्री की कोई प्रतिमा नहीं है। गायत्री (मंत्र) एक दिव्य शक्ति है। जिसको अर्थ सहित ध्यान करके मनुष्य आत्म बल प्राप्त करता है। यह मनुष्य को सद्वुद्धि की प्रेरणा देती है। गायत्री मंत्र से आत्मसात होने के पश्चात मनुष्य में निरन्तर एक ऐसी सूक्ष्म एवं चैतन्य विद्युतधारा का सञ्चरण होने लगती है जो प्रधानतः मन, बुद्धि, चित्त और अन्तःकरण पर प्रभाव डालता है।

मनुष्य के अनेकों कुविचारों असत् संकल्पों, पतनोन्मुख दुर्गुणों का अंधकार गायत्री के ध्यान व चिंतन से दूर होने लगता है। गायत्री ज्ञान का प्रकाश जैसे-जैसे तीव्र होता जाता है वैसे-वैसे अंधकार उसी क्रम में दूर भाग जाता है।

मन के संकल्पों को सुव्यवस्थित, स्वस्थ, सतोगुणी एवं संतुलित बनाने में गायत्री का चमत्कारी लाभ असंदिग्ध है। यह बात भी निश्चित है कि मनुष्य के मनोभाव जितने अंशों में सुविकसित होंगे वह उसी अनुपात में सुखी रहेगा, क्योंकि विचारों के पश्चात ही मनुष्य कार्य करता है और कार्यों के परिणाम सुख-दुःख के रूप में प्राप्त होते है। मनुष्य के विचार उत्तम है तो वह उत्तम कार्य करेगा। और उत्तम कार्यों का परिणाम ही सुख और शान्ति प्रदान करता है।

वेद कहते है ज्ञान को। ज्ञान के चार भेद है- ऋक, यजुः, साम और अथर्व।

मंत्रों द्वारा विलक्षण कार्य होने का कारण- गायत्री साधना कोई अंधविश्वास नहीं, एक ठोस वैज्ञानिक कृत्य है और उसके द्वारा लाभ भी सुनिश्चित होता है।

गायत्री साधन से श्री, समृद्धि और सफलता- गायत्री की उपासना से जहाँ सतोगुण बढ़ता है, वहाँ कल्याण कारक एवं उपयोगी रजोगुण की भी वृद्धि होती है। रजोगुणी आत्मबल बढ़ने से मनुष्य की गुप्त शक्तियाँ जागृत होती है, जो सांसारिक जीवन के संघर्ष में अनुकूल प्रतिक्रिया उत्पन्न करती है। उत्साह, साहस, स्फूर्ति, आशा, दूरदर्शिता, तीव्र बुद्धि, अवसर की पहचान, वाणी का माधुर्य, व्यक्तित्व में आकर्षण, स्वभाव में मिलनसारी जैसी अनेक छोटी बड़ी विशेषताऐं उन्नत तथा विकसित होती है, इससे मनुष्य का विकास होता है श्री तत्व की वृद्धि होती रहती है और आपको परिवर्तन का पता भी नहीं चलता जिसके कारण साधारण व्यक्ति भी धनी-समृद्ध हो जाता है।

गायत्री साधना से सतोगुणी सिद्धियाँ- प्राचीन आर्ष ग्रंथों से पता चलता है कि पूर्व में प्रायः ऋषि महर्षि गायत्री के आधार पर योग-साधना तथा तपस्या करते थे। वशिष्ठ, याज्ञवल्क्य, अत्रि, विश्वामित्र, व्यास, शुकदेव, दधीचि, बाल्मीकि, च्यवन, शंख, लोमश, जाबालि, उददालक, वैशम्पायन, दुर्वासा, परशुराम, पुलस्त्य, दत्रात्रेय, अगस्त्य, सनतकुमार, शौनक, शंकराचार्य, प्रज्ञाचक्षु स्वामी बिरजा नन्द, स्वामी दयानन्द आदि ऋषियों के जीवन वृतान्तों से स्पष्ट है कि उनकी महान् सफलताओं का मूल हेतू गायत्री ही थी।

गायत्री साधनासे मनुष्य में सतोगुण का विकास होता है- आत्म शुद्धि, पाप से घृणा, सन्मार्ग में श्रद्धा, संयम, पवित्रता, आस्तिकता, जागरूकता एवं धर्म परायणता की प्रवृतियों को बल प्राप्त होता है। गायत्री की साधना से आत्म जागरण लौकिक और पारलौकिक, सांसारिक और आत्मिक सभी प्रकार की सफलताओं को प्राप्त किया जा सकता है।

विषय प्रवेश-

हे ईश्वर! दयानिधे! भवत्कृपया अनेन जपोपासनादिकर्मणा
धर्मार्थकाम मोक्षाणाम् सद्यः सिद्धिर्भवेत् नः

मनुष्य के जीवन का लक्ष्य चतुर्वर्गे फल प्राप्ति 'धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष' है। यह सिद्धि जपोपासना आदि कर्म से प्राप्त होती है। अर्थात् धर्म, अर्थ काम, मोक्ष यह सब मिलकर एक कर्म है। इस कर्म का स्वरूप जपोपासना है। उपासनाहीन जप इस कर्म का स्वरूप नहीं है। यह जप उपासनामय है। कोरे जप से धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष सिद्ध नहीं होते। ऋषि निर्दिष्ट जप शब्द का अर्थ उच्चारण मात्र नहीं है। ऋषि निर्दिष्ट जप तो अनुष्ठान पद्धति के साथ अर्थ-विचार पूर्वक, तद्नुसार अपना चाल-चलन बनाते हुए है।

अनुष्ठान पद्धति से तात्पर्य है संध्या उपासना- बाल्मीकि रामायण में जपोपासना का वर्णन आता है-

तस्यर्षेः परमोदारम बचः, श्रुत्वा नरोत्तमौ।
स्नात्वा कृतोदकौ वीरौ, जपेतुः परमं जपम्।।

विश्वामित्र के परम उदार वचन को सुनकर दोनों भाई राम और लक्ष्मण ने नित्यकर्म स्नान, संध्या आदि करके परम जप गायत्री का जप किया।

प्राचीन काल के सब आर्य गायत्री जप करते थे और इस जप को ही

अच्छी शिक्षा के बिना मनुश्यों के सुख के लिए और कोई भी आश्रय नहीं है। इसलिये सबको उचित है कि आलस्य और कपट आदि कुकर्मों को छोड़के विद्या के प्रचार के लिए सदा प्रयत्न किया करें।

thearyasamaj.org

संध्या कर्म कहा जाता था। जप से पूर्ववर्ती क्रियाऐं ही संध्या में वर्णन की गई है।

जैसे- आचमन, अङ्गस्पर्श, मार्जन, प्राणायाम, अघमर्षण, मनसा, परिक्रमा, उपस्थान आदि। इन सब अंगों के समुदाय का नाम संध्या है। जिसमें जप प्रधान कर्म है और आचमन आदि अङ्गकर्मो को करने के अनन्तर ही जप किया जाता है। शुष्क जप नहीं। वही साङ्गोपाङ्ग जप फलदायक है।

मध्यकाल में जपोपासना का स्वरूप विकृत हो गया। उपासना विषय जोकि सर्वमान्य प्राचीन वैदिक पद्धति थी उसे भुलाकर वह संध्या ब्राह्मण , क्षत्रिय, वैश्य, ठाकुर, ऋग्वेदी, यजुर्वेदी, सामवेदी, आदि स्वयं को धारण कर चुकी थी जो काल्पनिक और भ्रामक, संगठन नाशक, अनावश्यक और अप्रामाणिक थी।

महर्षि स्वामी दयानन्द जी ने प्राचीन वैदिक विधि को अपनी योग व वेद विद्या के आधार पर प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि गायत्री जप से पूर्व अपने शरीर इन्द्रिय, मन, बुद्धि, चित और अहंकार की सुस्थिति संपादन की जाये जिससे जप हो सके। उसके लिये छह कर्म विधि विहित है-

1. आचमन से शरीर, 2. इन्द्रिय स्पर्श और मार्जन से- इन्द्रियां
3. प्राणायाम से मन, 4. अघमर्षण से बुद्धि
5. मनसा परिक्रमा से चित्त, 6. उपस्थान से अहंकार

इसलिये स्वामी जी ने कहा कि प्रातः सायं दोनों समय कम से कम एक घंटा जपोपासना करनी चाहिए।

सारांश यह है कि गायत्री के जप को प्रारम्भ करने वाला व्यक्ति पहले आत्मा और मन को शांत करें फिर-

अद्भिर्गात्राणि शुध्यन्ति, मनः सत्येन शुध्यति।
विद्यातपोभ्यां भूतात्मा बुद्धिर्ज्ञानेन शुध्यति।।

शरीर जल से, मन सत्य से, जीवात्मा विद्या और तप से, और बुद्धिज्ञान से शुद्ध होती है। ऐसा करके आत्मा और मन को शान्त करे फिर छः अनुष्ठानों के द्वारा क्रमशः शरीर, इन्द्रियाँ, मन, बुद्धि, चित्त को सुव्यवस्थित कर और अहंकार में स्थिति संपादन करके तब गायत्री का जप प्रारम्भ करें।

गायत्री के अनेक नाम

* गायत्री- गायत्री छंद में होने के कारण इसको गायत्री कहते है।
* सावित्री- इस मंत्र का देवता सविता है, अतः इस मंत्र को सावित्री कहते है।
* गुरुमंत्र- वेदारम्भ संस्कार में गुरु अपने शिष्य को इस मंत्र का उपदेश देते है अतः इस मंत्र का नाम गुरु मंत्र है।
* वेदमाता- इस मंत्र को वेद में वेदमाता नाम से कहा गया है। स्तुता मया वरदा वेदमाता मंत्र से विदित है।
* मंत्रराज- सब मंत्रों में यह सर्वश्रेष्ठ है अतः इसको कुछ स्थानों पर मंत्र राज नाम से कहा जाता है।
* वेदमुख- यह गायत्री मंत्र वेदों में मुख्य मंत्र है, अतः इसको वेद मुख भी कहते है।
* कामधेनु- गायत्री मंत्र से सब इच्छाएँ पूर्ण हो जाती है।

जैसा कि ऋषि ने भी धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष की प्राप्ति गायत्री जाप से ही बताई है। इसलिए इस मंत्र का नाम कामधेनु भी है।

गायत्री मंत्र चारों वेदों में है। जिनके ऋषि निम्न प्रकार है-

ऋग्वेद में गायत्रीमंत्र का ऋषि विश्वामित्र है। यजुर्वेद 3/35 और 22/9 में गायत्री मंत्र का ऋषि परमेष्ठी प्रजापति हैं तथा यजुर्वेद 30/2 के गायत्री मंत्र का ऋषि विवस्वान् है और यजुर्वेद 36/3 के गायत्री मंत्र का ऋषि दध्यङ आथर्वण है। सामवेद ऋग्वेदानुसारी है। पर महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी प्रायः सब स्थानों पर गायत्री मंत्र का ऋषि विश्वामित्र मानते है परन्तु यजुर्वेद 30/2 में गायत्री मंत्र का ऋषि नारायण मानते है।

गायत्री के भिन्न-भिन्न नाम अवस्था भेद से- तीव्रता से मंत्र जप करने से नाडियों का विकास होता है धीरे-धीरे करने और सुनने से मन पर प्रभाव पड़ता है। ओ३म् की ध्वनि लम्बी और कीर्तन से कुम्भक तथा मानसिक शक्ति बढ़ती है।

वाचक जप का नाम 'गायत्री' है यह वाणी की तीव्रता शुद्ध करती है। मानसिक जप का नाम सावित्री है। यह मन को पवित्र करती और उसकी रक्षा करती है। आत्मिक (ध्यान) रूप का नाम 'सरस्वती' है, वह आत्मा का कल्याण और आवरण को दूर करती है।

गायत्री मंत्र से जीवन का कायाकल्प- गायत्री मंत्र से आत्मिक कायाकल्प हो जाता है। इस महामंत्र की उपासना आरम्भ करते है साधक को ऐसा प्रतीत होता है कि मेरे आन्तरिक क्षेत्र में एक नयी हलचल एवं रद्दोबदल आरम्भ हो गई है। सतोगुणी तत्वों की अभिवृद्धि होने तथा दुर्गुण, कुविचार, दुःस्वभाव एवं दुर्भाव घटने आरम्भ हो जाते है और संयम, नम्रता, पवित्रता, उत्साह, श्रमशीलता, मधुरता, ईमानदारी, सत्यनिष्ठा, उदारता, प्रेम, संतोष, शान्ति, सेवाभाव, आत्मीयता आदि की मात्रा दिन-दिन बड़ी तेजी से बढ़ती जाती है। फलस्वरूप लोग उसके स्वभाव एवं आचरण से संतुष्ट होकर बदले में प्रशंसा, कृतज्ञता, श्रद्धा एवं सम्मान के भाव रखते है। इसके अतिरिक्त ये सद्गुण स्वयं इतने मधुर होते है कि जिस हृदय में इनका निवास होगा, वहां आत्म संतोष की परम शान्ति दायक निर्झरिणी सदा बहती है।

गायत्री साधना से साधक के मन क्षेत्र में असाधारण परिवर्तन हो जाता है। विवेक तत्व-ज्ञान और ऋतम्भरा बुद्धि की अभिवृद्धि हो जाने के कारण अनेक अज्ञान जन्य दुखों का निवारण हो जता है। प्रारब्धवश अनिवार्य कर्मफल के कारण, कष्ट साध्य परिस्थितियाँ हर एक के जीवन में आती रहती है। हानि शोक, वियोग, आपत्ति, रोग, आक्रमण, विरोध, आघात आदि विभिन्न परिस्थितियों में जहां साधारण मनोभूमि के लोग मृत्यु तुल्य कष्ट पाते है, वहां आत्मबल सम्पन्न गायत्री साधक अपने विवेकज्ञान, वैराग्य, साहस, आशा, धैर्य, संतोष संयम, ईश्वर, विश्वास के आधार पर इन कठिनाइयाँ को हँसते-हँसते आसानी से काट लेते है। बुरी अथवा साधारण परिस्थितियों में भी अपने आनन्द का मार्ग ढूंढ निकालते है। और मस्ती एवं प्रसन्नता का जीवन बिताते है। अनेक लोगों ने गायत्री मंत्र की साधना से जो आत्म बल प्राप्त किया है। उसका कारण यह है कि हर एक कठिनाई के पीछे, जड़ में निश्चय ही कुछ न कुछ अपनी त्रुटियाँ, अयोग्यतायें एवं खराबियाँ रहती है। सद्गुणों की वृद्धि

ये हमारे शिक्षक ही हैं, जो रचनात्मक क्रियाओं और अपने ज्ञान से हमारे अंदर आनंद पैदा करते हैं। इस आनंद में याद किया गया विषय व्यक्ति अपने अंतिम समय तक नहीं भूल सकता। – एल्बर्ट आइंस्टीन, वैज्ञानिक

thearyasamaj.org

के साथ अपने आहार-विहार, दिनचर्या, दृष्टिकोण, स्वभाव एवं कार्यक्रम में परिवर्तन होता है। यह परिवर्तन ही आपत्तियों के निवारण का, सुख-शांति की स्थापना का राजमार्ग बन जाता है। कई बार हमारी इच्छाएँ, तृष्णाएँ, लालसायें कामनायें ऐसी होती है, जो अपनी योग्यता एवं परिस्थितियों से मेल नहीं खाती। मस्तिष्क शुद्ध होने पर बुद्धिमान व्यक्ति उन मृगतृष्णाओं को त्यागकर अकारण दु:खी रहने से, भ्रमजाल से छूट जाता है। अवश्यभावी न छलने वाले प्रारब्ध का बोध जब सामने आता है, तो साधारण व्यक्ति बुरी तरह रोते चिल्लाते है, किन्तु गायत्री साधक में इतना आत्मबल एवं साहस बढ़ जाता है कि वह उन्हें हँसते-हँसते झेल लेता है।

ज्ञान ईश्वर प्रदत्त है और अपौरुषेय है। ज्ञान मनुष्यकृत नहीं है और ना ही क्रम विकास से उत्पत्ति है। जिस मनुष्य जाति को ईश्वर प्रदत्त ज्ञान प्राप्त हुआ है, उसको भाषा भी ईश्वरीय प्रेरणा से ही प्राप्त हुई है। क्योंकि ज्ञान बिना भाषा के ठहर नहीं सकता अर्थात् वह परम्परा से चल नहीं सकता। ज्ञान और भाषा का सम्बन्ध जोडिया भाई-बहन की भाँति है। एक बिना दूसरे के रह ही नहीं सकती। जिस प्रकार ज्ञान बिना सीखा नहीं जाता उसी प्रकार भाषा भी बिना सिखाये नहीं आती।

निदेवन - जीवन सफल बनाने के लिए स्वयं को साधना की ओर मोडों तभी मनुष्य का कल्याण होगा। -अमर मुनि

राजस्थान की समस्त आर्य समाजों से निवेदन है कि वे अपनी-अपनी समाजों में दशहरा पर्व दिनांक 3 अक्टूबर व दीपावली पर्व एवं ऋषि निर्वाण दिवस 23 अक्टूबर 2014 को बड़े उत्साह के साथ मनावें।
-अमर मुनि

अथ ईशोवाच- ओ३म् मन्त्रश्रुत्यं चरामसि= वेदमन्त्रानुसार आचरण करना ही ईश व वेद के प्रति श्रद्धा है।।

प्रतिदिन यज्ञ करते हुए भी प्राय: लोगों को लाभ क्यों नहीं होता?

(वैदिक-वैज्ञानिक महर्षि दयानन्दादि के 'भक्त' हवन में होने वाली त्रुटियों पर ध्यान दें)

लेखक- आचार्य आर्य नरेश वैदिक गवेषक पी.एच.डी गाईड व भू.पू. इंजीनियर

'महर्षि देव दयानन्द सरस्वती' वर्तमानयुग के प्रथम ऐसे वैज्ञानिक थे जिन्होंने आज से ल.भ.१२५ वर्ष पूर्व यज्ञ-हवन को वेद की छाया में संसार के सभी जड़ व चेतन पदार्थों हेतु सर्वाधिक लाभकारी वैज्ञानिक सुकर्म कहा। स्व. कालजयी क्रान्तिकारी ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश के ३ समु. में यज्ञ पर शंकर के उत्तर में लिखते हैं कि यदि तुम 'पदार्थ विद्या' जानते तो कभी यज्ञ का विरोध न करते। पदार्थ विद्या से अभिप्राय उन रासायनिक क्रियाओं से है जिनका अध्ययन कैमिस्ट्री इक्वेशनों के द्वारा किया जाता है। कहने का मूल अभिप्राय यह है कि वैदिक यज्ञ एक वैज्ञानिक क्रिया है। इसके द्वारा पूर्ण-लाभ अथवा शीघ्र- लाभ तभी हो सकता है जब हम इसे ठीक उसी प्रकार से करें जैसे कि देव दयानन्दादि ऋषियों ने वेद व शास्त्र के अनुसार इसका निर्देश किया है। यदि हम इसे अपनी मन चाही इच्छा से एवं मनचाहे साधनों एवं विधि से करते है तो इससे हानि होती है, लाभ कम होता है अथवा होता ही नहीं। इसके मुख्य कारण निम्नलिखित है-

1. सबसे बड़ी त्रुटि गलत माप के ऋषि आज्ञा से विरूद्ध हवनकुण्ड का चयन। देव दयानन्द सरस्वती संस्कार विधि व सत्यार्थ प्रकाश में हवन कुण्ड का परिमाप लिखिते हुए संकेत करते हैं कि- "जितना ऊपर से चौड़ा, उतना ही गहरा एवं उस चौड़ाई से चौथाई भाग पेंदे वाला अर्थात् यदि ऊपर से 12" है तो गहरा 12" व पेंदे में 3"×3" होना चाहिए।

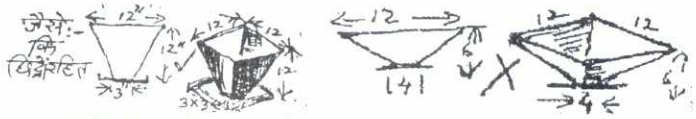

जबकि कुछ पौराणिक लोगों की नकल या समिधाओं को ठीक काटने बचने हेतु गलत कुण्ड का परिमाण ल.म. होता है- 12×6×4। तर्क विज्ञानशील बुद्धिजीवी आर्यों को अपना कोई भी कार्य शास्त्र विरूद्ध न करना चाहिए। कुण्ड जितनी अच्छी धातु का होगा उतना अधिक लाभ होगा। पहले प्रकार के ऋषि निर्दिष्ट कुण्ड में जड़ी बूटियों को वाष्परूप में लाने हेतु ज्वलन क्रिया में भीतर 600° से 1300° तक तापमान पहुँच जाता है। जिससे प्रत्येक पदार्थ कम्बश्चन क्रिया द्वारा उचित लाभ पहुँचाता है। ऐसे कुण्ड में लाभपूर्ण लेने हेतु छिद्र करने की कभी भूल न करनी चाहिए। छिद्र करने से तापमान कम हो सकता है तथा कुण्ड शीघ्र टूट जाता है एवं सामग्री व घृत बाहर भी गिर जाते हैं। जो लोग जब कुण्ड घरों व समाज भवनों की यज्ञशालाओं में धरती के भीतर बनता है तब भी तो अग्नि बहुत अच्छी प्रकार से जलती है। अपितु धरती वाला कुण्ड अधिक लाभकारी होता है क्योंकि उसमें आहूत की गई विभिन्न रोगनाशक प्राकृतिक जड़ी बूटियां सूक्ष्म होकर घर के नीचे वाली भूमि को भी स्वस्थ रखती हैं जिससे इसमें दीमक आदि का भी भय नहीं रहता। आजकल दीमक का उपचार करने वाले जहां जानलेवा रासायनिक औषधियों को खिड़की, किवाडों व अलमारियों में लगाते हैं वहां इसके साथ-साथ भवन के चारों ओर की धरती में भी लगाते है। यदि आपके पास अपना घर है अथवा बनाने जा रहे है तो यज्ञ कुण्ड धरती में ही तीन मेखला वाला बनायें। पक्का हवनकुण्ड आपकी पक्की ईश्वर वेद व ऋषि भक्ति का भी परिचायक है। यह आपके परिवार को आपके पश्चात् भी पक्का ईश-वेद भक्त बनने की व दैनिक यज्ञ के करने की प्रेरणा देकर आर्य बनाए रखेगा। यदि आपके पीछे पुत्र-पुत्रवधु व पौत्र आलस्य छोड़ भी देंगे तो आने वाले आर्यातिथिजन उन्हें आप द्वारा बनउए गए कुण्ड को स्मरण करवाकर पुन: परिवार सहित मिलकर संख्या हवन व वेदपाठ करने की प्रेरणा देगा। बुद्धिजीवी तर्कशील आर्यो। जब घर-भवन में अनेक कमरे सोने-खाने एवं गप लगाने के (ड्राइंगरूम) जैसे पक्के तो फिर भगवान के सर्वश्रेष्ठ यज्ञ का स्थान कच्चा क्यों? वह घर= होम ही नहीं जहां प्रतिदिन होम नहीं होता। मेखला दिल्ली के वैज्ञानिक ने सर्वप्रथम यही पूछा कि आपका कुण्ड कैसा था जब मैने 12×12×3 या 1×1× ¼ कहा तो वे कहने लगे बिलकुल ठीक। इससे मिलता है पूर्ण लाभ।

यज्ञ विज्ञान के पूर्ण लाभ हेतु कुण्ड कैसा हो?-कुण्ड सदा क×क×क/4 बनायें एवं उसमें भूलकर भी छिद्र न करें। ऐसे कुण्ड में हमारी आहुतियों को पूर्ण तापमान मिलने से वे पूर्ण लाभकारी होती हें। गहरे कुण्ड में जहाँ

शिक्षा का मतलब किसी घड़े को भरना नहीं है। बल्कि यह प्रकाश को प्रज्जवलित करने जैसा है। किसी को साक्षर बनाना किसी पुण्य से कम नहीं है। शिक्षा का जितना प्रसार होगा, उतना प्रकाश फैलेगा। - विलियम बटलर, महान आयरिश साहित्यकार

thearyasamaj.org

रियेक्शन पूर्ण होते हैं वहां इसके साथ-साथ यज्ञ करने वाले को ताप भी कम लगता है। जबकि ठीक इससे विपरीत नाटे अवैदिक या पौराणिक कुण्ड में तापमान कम रहने व कैमिकल रियेक्शन अपूर्ण रहने से लाभ भी कम मिलता है एवं समिधाओं (लकड़ियों) और सामग्री के जलने से बाहर निकलने वाला ताप भी चेहरे एवं शरीर को हानि पहुँचाता है। ऐसे गलत कुण्ड में यज्ञ करने वालों को वह अनावश्यक तीव्र आग रोगों का कारण भी बन सकती है। ऋषिवर ने पूर्ण लाभ दिलवाने एवं हानि से बचने हेतु प्रतिदिन यज्ञ करने वालों को मेखलावाले एवं गहरे कुण्ड बनाने की आज्ञा दी है। तीन मेखला (चारों ओर कुण्ड के बनी तीन सीड़ियां) अपनी चौडाई के कारण यज्ञकर्त्ता को अग्नि से उचित दूरी पर रखती है। पदार्थ जब जलते हैं तो वे वातारण की ऑक्सीजन से रिएक्ट होकर लाभ परिवर्तित होते है। मौनोऑक्साईड आदि ऑक्सीजन से मिलकर व सूर्य तथा चारों ओर वनस्पतियों की उपस्थिति में जीवन दायी बन जाती है। इसके लिए अग्निकुण्ड व यजमान में अंतर चाहिए। यही मेखला का वैज्ञानिक लाभ है एवं यह यज्ञकुण्ड का वस्त्र या शोभा भी माना जाता है। जब कुण्ड देवदयानन्द निर्दिष्ट संस्कारविधि के अनुसार सुन्दर कुम-कुम हल्दी की रेखाओं द्वारा सजाया जाता है तो इससे हमारी श्रद्धा भी प्रकट होती है एवं प्यार भी। गुजरात, महाराष्ट्र, उड़ीसा, कर्नाटक आदि प्रांतों में मातायें घर की सफाई के पश्चात उसके मुख्य द्वार पर रंगोली बनाती है। ऐसे घर में प्रवेश करते ही हृदय प्रफुल्लित होता है। ऐसे ही सुन्दर साफ, प्रतिदिन लिपे हुए कुण्ड में यज्ञ हेतु बैठने पर मन की प्रसन्नता से उस क्रिया का पूर्ण व अधिक लाभ होता है। या तो कुण्ड में अग्नि रहे या फिर उसे प्रतिदिन कल की राख को निकाल साफ कर लिया जाए। जो हानि नाटे कुण्ड में हवन करने से है उससे अधिक हानि राख से आधे भरे कुण्ड में यज्ञ करने में है, क्योंकि कुण्ड के नीचे पड़ी कल की राख आज वाली अग्नि को चमकाने के स्थान पर अपने मे समेट कर मंद कर देती है। एक बात यह भी ध्यान में रखने की है कि पक्के की अपेक्षा अंदर से कच्चा कुण्ड अधिक लाभकारी है जो प्रतिदिन गाय के गोबर से लीपा जाता है। जो लोग कुण्ड में अर्थात् मिट्टी वाली यज्ञवेदी में चिटिंयों को आने की शंका रकते है वह उनका बलिवैश्वदेव यज्ञ न करने का पाप है। यदि गृहस्थ प्रतिदिन भोजन से पूर्व कीड़े-मकोड़ों हेतु पक्षी सुरक्षित व कुत्ते से सुरक्षित स्थान पर आटे में शक्कर मिलाकर डालेंगे तो चीटिंया हवन कुण्ड में नहीं आएंगी। जो लोग चीटिंओं को हटाने हेतु पानी की नाली बनाते है वह गलत है। इसके लिए हमारी लिखी पुस्तक यज्ञ विज्ञान परिचय पढ़े- यज्ञकुण्ड के चारों ओर नाली बनाने का कहीं विधान नहीं। कर्मकाण्डीय ग्रंथों में कुण्ड अनेक रूपों यथा गोल आदि बनाने का भी विधान है परन्तु उसका परिमाण,क×क×क/2 ही होना चाहिए। जो लोग कुण्ड के बाहर न बना भीतर मेखला सीड़ी बनाते है वे भी गलत हैं इससे आहुतियां भीतर कुण्ड की दीवारों में अटक जाती हैं पूर्ण नहीं जलती व धूयें से प्रदूषण करती है।

2. यज्ञीय भूमि या वेदी- यज्ञ के पूर्ण लाभ हेतु भूमि पवित्र अच्छी मिट्टी वाली व चारों ओर से खुली फूल-पत्तो बेलों से युक्त हो जिससे उनकी उपस्थिति में मन की प्रसन्नता गर्मियों में कम ऊष्णता तथा फोओ संचित = प्रकाश संश्लेषण से यज्ञीय पदार्थो का पूर्ण लाभ हो सके। यज्ञ के समीप उन पौधों के रहने से उनके गुणों की भी वृद्धि होती है एवं वे कीट रहित निरोगी होकर अधिक लाभकारी होते हैं। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु लौकी आदि के बेले एवं अन्य सब्जियों के पौधे भी लगाये जा सकते है। गविषणो में हमने सोयाबीन लगाई थी जो सफल रही।

यज्ञशाला व समिधा विज्ञान- महर्षि दयानन्द सरस्वती संस्कार विधि के सामान्य प्रकरण में यज्ञशाला व यज्ञ वेदी को खुला, श्रद्धापूर्वक सजाने की बात लिखते हैं। ऊपर पर्दा बांधने की बात लिखते हैं। जिससे ऐसा विचार होता है कि कुण्ड में ऊपर से कोई विजातीय द्रव्य न गिरे एवं धूएं का ठोस कार्बन भाग छन जाए। इस पर विज्ञानवेताओं को और अधिक विचार करना चाहिए। यज्ञशाला व वेदी के सुंदर बनने से मन प्रसन्न होकर रुचि को बढ़ाता है एवं बढ़ी हुई रुचि से लाभ अधिक होता है। इसीलिए यह कहावत भी लोक में प्रसिद्ध है कि रुचे, सो, पचे। बिना श्रद्धा, रुचि व मानसिक प्रसन्नता से खानापूर्ति के लिए किया गया यज्ञ पूर्ण लाभ नहीं देता। तन व मन से श्रद्धा-प्रसन्नतायुक्त बैठें।

3. 'यज्ञीय समिधा' बिना कीड़े, बिना सड़कों की गदंगी, बिना कोयला बनने वाली हलकी लकड़ी की होनी चाहिए। जिनके जलने से सीधी राख बन जाए। जैसे बढ़, पीपल, आम आदि जिन पर्वतीय स्थलों पर ऐसी समिधा न मिले वहां उनसे मिलती-जुलती फलों के पेड़ों की समिधा प्रयोग करें। आपातकाल में यदि ऊपर से स्वच्छ समिधा न मिलें तो उन्हें पहले पानी से धोकर, धूप में सुखाकर प्रयोग करें। समिधा यज्ञ का मूल प्राण है यदि समिधा सूखी, उचित वृक्ष की व ठीक परिमाण की नहीं हैएवं वेदी में उनके रखने का प्रकार (ढंग) ठीक नहीं तो अधिक से अधिक घृत डालकर भी अग्नि का पूर्ण जलना कठिन है। दैनिक यज्ञ में प्रायः समिधा अंगूठे से मोटी न हों। कुण्ड के आकार समान ही उनकी छोटी से बड़ी लम्बाई कटी हो। पतली समिधा शीघ्र अग्नि को पकड़ेगी व ऊपर वाली मोटी समिधा को तुरन्त जलायेंगी। अतः नीचे पतली व छोटी और ऊपर मोटी व लम्बी समिधाएं रखें। नीचे मोटी समिधाएं रखने से शीघ्र जलेगी नहीं एवं ऊपर बहुत पतनी रखने से तुरन्त जलने के कारण। राख हो जाने से सामग्री को जला नहीं पायेंगी। कुण्ड में समिधा रखते समय ध्यान दें कि न तो कुण्ड की दीवारों से सटे एवं नहीं कुण्ड के मध्य में आकर चारों ओर व बीच से मिलने वाली वायु के रिक्त स्थान को रोककर अग्नि के बुझने एवं न जलने का कारण बने। यज्ञ का सबसे महत्वपूर्ण कार्य समिधाओं को ठीक रखना है एवं पूर्ण राख बनने से पूर्व समय पर और रखना है। राख बनने पर रखी गई समिधा शीघ्र नहीं जलती तथा आहुतियों को नहीं जला पाने से धूयें द्वारा रोग व हानि पहुँचा सकती हैं। आठ अंगुल की तीन समिधा दो चप्पे अर्थात् आठ अंगुल की ही होनी चाहिए। छाल सहित समिधा पूर्ण लाभ देती है परन्तु प्रयोग करने से पूर्व सदा अच्छी तरह से झाड़ ले। एक बात सदा ध्यान में रखें कि समिधा न तो आवश्यकता से कम जलाएं एवं नहीं आवश्यकता से बहुत अधिक जलाकर वृक्षों व शरीरको हानि पहुँचाए। वृक्षों की समिधाओं के अभाव में स्वदेशी गाय के गोबर को चीकने तल पर बिछाकर जिसकी मोटाई एक के अंतर पर गहरी लाईने लगा दें। धूप में सूखने पर आपको ठीक माप की समिधा प्राप्त होंगी। यह अनुभूत प्रयोग है हमारा। सामग्री महर्षिदयानन्द निदिष्ट हो, उसमें ऋतु के अनुसार तिल, मूंग उड़द, व जौ मिलाएं। अपने पारिवारिक रोगों के अनुसार उन-उन जड़ी बूटियों को अधिक मात्रा में मिलायें। जोड़ो दर्द में हरसिगार फल के पत्ते, अश्वगंध, गुग्गल, हल्दी मेथे डालें। स्मरण शक्ति हेतु ब्रह्मी, शैखावली, वच-मलकंगनी डाले। त्वचा व रक्त शुद्धि हेतु गिलोय, नीमपत्र, चिरायता डालें। डिप्रेशन, अलर्जी व नेत्र ज्योति हेतु त्रिफला, चन्दन, बादामादि। पेट के रोगों हेतु घृत डालने के अनुपात में हो। दो-छः मासा घृत वाले तो तीन-६-६ मासा सामग्री वाले। मंत्रों को बोलते समय अनेक दूर बैठे लोगों द्वारा एकत्रित की गई सामग्री को एक दम डालने से पूर्ण लाभ नहीं होता। दो आहुतियों में एक मंत्र का अंतर हो, जिससे वह पूर्ण जल सके एवं पूर्ण लाभ दे सके। यज्ञ में एकश्रुति मंत्रपाठ का प्रमाण है, शीघ्रता (जल्दी-जल्दी) संख्या पूर्ण करने के चक्कर में मंत्र बोलने एवं यज्ञ करने से लाभ न होकर मानसिक हानि होती है। कुण्ड के बीच ढेरी बनकर एक बात न हो घृत पहले पिघला, छमासा, केसर व जावेत्री युक्त हो संभव हो तो गाय का ही हो।

अगर आप किसी चीज को संपूर्ण रूप से जानते हैं, तो उसके बारे में दूसरों को जरूर बताएं। ज्ञान को अपने पास संजोकर रखना सरासर गलत है। ये बढ़ने की बजाय कम हो जाता है। शिक्षा का सही अर्थ यही है। – टॉयन एडवर्ड्स, अमेरिकी धर्मशास्त्री

thearyasamaj.org

आर्य समाज स्वामी दयानन्द मार्ग, अलवर द्वारा
कार्तिक मासीय यज्ञ

(दिनांक 8 अक्टूबर से 6 नवम्बर 2014 तक)

आपको यह जानकर हर्ष होगा कि सन् 1892 में स्थापित आर्य समाज स्वामी दयानन्द, अलवर का 111वाँ **'वार्षिकोत्सव'** एवं 24वाँ **'कार्तिक मासीय यज्ञ'** वैदिक विद्वान **श्री विद्यासागर शास्त्री जी** (पूर्व प्रधान- आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान) के संरक्षण एवं प्रांतीय सभा, राजस्थान के महामंत्री **श्री अमर मुनि जी** की अध्यक्षता में आगामी दिनांक 5 व 6 नवम्बर 2014 को समारोह पूर्वक मनाया जा रहा है। आर्य कन्या विद्यालय समिति के प्रधान **श्री जगदीश प्रसाद गुप्ता** मुख्य अतिथि एवं **कै. रघुनाथ सिंह जी** व **पं. विनोदीलाल दीक्षित** समारोह के विशिष्ट अतिथि होंगे तथा कार्तिक मासीय यज्ञ **पं. शिवकुमार कौशिक** के सानिध्य में होगा। इस अवसर पर तपस्वी संत **स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती** (सांसद एवं अध्यक्ष वैदिक आश्रम पिपराली, सीकर), सुप्रसिद्ध वेदज्ञ एवं **प्रो. (डॉ.) राजेन्द्र जी विद्यालंकार** (संस्कृत एवं प्राच्य विद्या संस्थान, कुरुक्षेत्र वि.वि., हरियाणा), प्रसिद्ध भजनोपदेशक **श्री सत्यपाल 'सरल'**, श्री हरिसिंह आर्य आदि अनेक विद्वान अपने सारगर्भित वेदोंपदेश एवं संगीतमय प्रस्तुति से हमें आनन्दित करेंगे। जिला सभा, अलवर के आर्य नेता श्री जगदीश आर्य (प्रधान), श्री हरिपाल शास्त्री (मंत्री), श्री धर्मसिंह आर्य (कोषाध्यक्ष) एवं जिले के प्रबुद्ध आर्यजन भी पधार रहे है।

आर्य समाज एक विश्वव्यापी विशाल संगठन है। महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा स्थापित आर्य समाज का उद्देश्य धर्म एवं समाज में व्याप्त अंधविश्वास, आडम्बर एवं पाखण्डपूर्ण कुरीतियों का उन्मूलन कर स्वस्थ समाज का निर्माण करना एवं गौरवमयी वैदिक संस्कृति को समृद्ध बनाना है। 'वार्षिकोत्सव' जैसे पुनीत आयोजन हमें आपकी सेवा करने का स्वर्णिम अवसर प्रदान करते है। आपकी गरिमामय उपस्थिति से आर्यजन की संगठन शक्ति को बल मिलता है।

अत: आप सभी से सविनय निवेदन है कि आर्य समाज के भव्य आयोजनों में सपरिवार पधार कर कार्यक्रम को सफल बनावें।

❖ कार्यक्रम: ❖

'ऋषि निर्वाण दिवस' एवं 'दीपावली पर्व'

विशेष अनुरोध - दिनांक 8 अक्टूबर से 4 नवम्बर 2014 तक प्रतिदिन कार्तिक यज्ञ का समय प्रात: 6.45 से 8 बजे तक व रविवार को प्रात: 7.30 से 9.30 बजे तक का रहेगा।

(दिनांक 23 अक्टूबर 2014, बृहस्पतिवार)

विशेष यज्ञ ..... प्रात: 7 से 8 बजे तक
भक्ति संगीत ..... प्रात: 8 से 8.30 बजे तक
श्रद्धाञ्जलि कार्यक्रम ..... प्रात: 8.30 से 10 बजे तक

'वार्षिकोत्सव' (दिनांक 5 नवम्बर 2014, बुधवार)

कार्तिक यज्ञ ..... प्रात: 6.45 से 8 बजे तक
भजन एवं वेदोपदेश ..... प्रात: 8 से 10 बजे तक
भजन एवं वेदोपदेश ..... रात्रि 7 से 10 बजे तक

'कार्तिक यज्ञ पूर्णाहुति' एवं 'वार्षिकोत्सव समापन'

(दिनांक 6 नवम्बर 2014, बृहस्पतिवार)

कार्तिक यज्ञ पूर्णाहुति ..... प्रात: 7.30 से 9 बजे तक
भजन एवं वेदोपदेश ..... प्रात: 9 से 12.30 बजे तक
ऋषि लंगर (भण्डारा) ..... मध्याह्न 12.30 से 2 बजे तक

अलवर जिला उप प्रतिनिधि सभा का कार्यकर्ता सम्मेलन

स्वामी दयानन्द मार्ग स्थित आर्य समाज मंदिर में आगामी दिनांक 5 नवम्बर 2014, बुधवार को जिला आर्य सभा कार्यकर्ता सम्मेलन सम्पन्न होने जा रहा है। जिसमें अपने मार्गदर्शन से लाभान्वित करने हेतु प्रान्तीय स्तर के महादोपदेशक एवं विद्वत्जन पधार रहे हैं। अत: सम्मेलन में भाग लेने हेतु जिले की समस्त आर्य समाजों के पदाधिकारीगण एवं कार्यकर्ता सादर आमंत्रित है। एवं इसी प्रकार शहर की अन्य समाजें अरावली विहार, काला कुआँ एवं बजाजा बाजार अलवर में भी प्रतिदिन 8 अक्टूबर से 6 नवम्बर 2014 तक कार्तिक यज्ञ का आयोजन 8.30 से 9.30 बजे तक होगा। -प्रदीप आर्य

आर्य उप प्रतिनिधि सभा जिला धौलपुर (राज.) द्वारा चतुर्वेद शतक महायज्ञ एवं वैदिक धर्म सम्मेलन

दिनांक 4 से 7 अक्टूबर 2014 तक

सम्मेलन में आमंत्रित विद्वत्जन- स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती (पलवल), श्री हरिशंकर अग्निहोत्री (आगरा), अल्का जी आर्य भजनोपदेशक, श्री भुपेन्द्र जी आर्य भजनोपदेशक (आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान), श्री माणिक चंद जी आर्य भजनोपदेशक आदि पधार रहे है।

इस अवसर पर शोभायात्रा एवं प्रवचन, यज्ञ एवं भजनोपदेश का रखा गया है। अत: आप सादर आमंत्रित है। - *आयोजन समिति, धौलपुर*

आर्य समाज स्वामी दयानन्द मार्ग, अलवर कार्यकारिणी का पुर्नगठन (दिनांक 21 सित. 2014 को सम्पन्न)

नवनिर्वाचित कार्यकारिणी के पदाधिकारी एवं अंतरंग सदस्यों की सूची-

प्रधान संरक्षक- श्री विद्या सागर शास्त्री, **संरक्षक**- श्री अमरमुनि, कै. रघुनाथ सिंह, **प्रधान**- श्री प्रदीप कुमार आर्य, **उप प्रधान**- डॉ. राजेन्द्र कुमार, श्री अशोक कुमार आर्य, श्रीमती कमला शर्मा, श्री सुरेन्द्र कुमार सक्सेना, **मंत्री**- श्री बृजेन्द्र देव आर्य, **संगठन मंत्री एवं पुरोहित**- श्री शिव कुमार कौशिक, **उपमंत्री**- श्री वदे प्रकाश शर्मा, **प्रचारमंत्री**- श्रीमती ईश्वरी शर्मा, **कोषाध्यक्ष**- श्री रामनारायण सैनी, **पुस्तकालयाध्यक्ष**- श्री रघुवीर आर्य, **अंतरंग सदस्य**- श्री सत्यपाल आर्य, श्री अशोक कुमार शर्मा, श्रीमती इन्द्रा आर्य, श्रीमती सुमन आर्य, श्रीमती शशि भार्गव, श्री बी.डी. गुप्ता, श्री महेन्द्र आर्य, श्री जी.पी. मित्तल, श्री राजहंस शर्मा, श्री सुरेश गुप्ता, श्री धर्म प्रकाश आर्य, श्री हरिश अरोड़ा, श्री हेमराज कल्ला, श्री शलैन्द्र भार्गव, श्री रामजीलाल शर्मा ।

- बृजेन्द्र देव आर्य, मंत्री

शिक्षकों को अपने अनुयायियों में खोज, रचनात्मकता, उद्यमिता और नैतिक भावना भरने का कार्य करना चाहिए। शिक्षक को अपने शिष्यों का आदर्श बनना चाहिए और इसके लिए उसे एक समर्पित और अनुशासित जीवन जीने की जरूरत होती है– एपीजे अब्दुल कलाम, पूर्व राष्ट्रपति

thearyasamaj.org

'आर्य समाज के प्रति कुछ भ्रान्तियाँ और उनका निवारण'

यह लेख एक आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान आदरणीय श्री रामनिवासजी 'गुणग्राहक' द्वारा लिखित एक लघु पुस्तिका 'जानें आर्य समाज को' शीर्ष से उद्धृत किया है। यह आर्य समाज को समझने के लिए एक अच्छी पुस्तक है। इसमें विद्वान ने आर्य समाज क्या मानता है और क्या नहीं मानता, इस विषय को बड़ी सरलभाषा में रोचक ढंग से समझाया है। जिसको पढ़कर एक जिज्ञासु व्यक्ति आर्य समाज को अच्छी प्रकार समझ सकता है और आर्य समाज का सदस्य बनकर अपने जीवन को वेदानुसार चला कर अपने व दूसरों के जीवन को सुखी व समृद्धिशाली बना सकता है। इस पुस्तक में आर्य समाज के प्रति लोगों की भ्रान्तियाँ तथा उनका निवारण भी विद्वान ने अपनी बुद्धि से बड़े अच्छे ढंग से किया है। इस पुस्तक को उपयोगी और लाभदायक समझकर भ्रान्तियों सम्बन्धित का कुछ अंश इस लेख द्वारा प्रकाशित करने का प्रयास किया है। आशा है पाठक गण इससे लाभ उठायेंगे और मेरे परिश्रम को सफल करेंगे।

भ्रान्तियाँ तथा निवारण इसी भाँति-

1. भ्रान्ति- आर्य समाज मूर्तिपूजा को नहीं मानता, इसलिए मूर्तिपूजक आर्य समाज को नास्तिक (ईश्वर को न मानने वाला) कहते हैं।

सच्चाई- संसार में आर्य समाज ही एक मात्र ऐसी संस्था है, जिसमें नियमों में परमात्मा के गुण, कर्म, स्वभाव और स्वरूप का सटीक परिचय देकर उसकी भक्ति व उपासना करने की सही प्रेरणा दी गई है। परमेश्वर के सत्य स्वरूप को जानने-समझने के लिए हमारे पास वेद ही एक मात्र साधन है। वेद को पढ़े-समझे बिना हम न तो धर्म को समझ सकते हैं और न परमात्मा को। इसलिए आर्य समाज के संस्थापक ऋषि दयानन्द ने तीसरे नियम में वेद का पढ़ना - पढ़ाना और सुनना-सुनाना धर्म ही नहीं, परम् धर्म घोषित किया है। ऐसे में आर्य समाज को मूर्तिपूजा न करने के कारण नास्तिक कहना एक भ्रम है, एक अज्ञान है। महापुरुषों की कल्पित मूर्तियाँ बनाकर मनमाने ढंग से उनकी पूजा के नाम पर फल-फूल, मिष्ठान चढ़ाने वाले आज तक न तो वेदों में मूर्ति-पूजा का विधान ही दिखा सके और न तर्कों व प्रमाणों से मूर्ति पूजा को ईश्वर की भक्ति व उपासना प्रमाणित कर सके। आर्य समाज प्रारम्भ से लेकर आज तक अपने सब सिद्धांतों, मान्यताओं को हर दृष्टि से वेद के अनुकूल और सत्य सिद्ध करता रहा है। ऐसे में प्रत्येक विचारशील सज्जन का यह नैतिक और मानवीय कर्तव्य है कि वह आर्य समाज की ईश्वर सम्बन्धी विचार धारा को जाने-समझे और मूर्ति-पूजकों की मानमानी कल्पनाओं के साथ तुलना करके सत्य को स्वीकार करे।

2. भ्रान्ति- मूर्ति-पूजा के दूसरे रूपों जैसे काली, दुर्गा, भैरव, शनि, सांईबाबा आदि कल्पित देवी-देवताओं का विरोध करने के कारण, आर्य समाज को देवों की पूजा न करने, न मानने वाला भी कहा जाता है।

सच्चाई- हमारे प्राचीन शास्त्रों में कहा गया है- मातृ देवोभव, पितृ देवोभव, आचार्य देवोभव, अतिथि देवोभव आदि वाक्य आपको वैदिक ही नहीं पुराण-पंथी साहित्य में भी मिल जाएँगे। ऐसे वचन स्पष्ट बताते हैं कि माता देव है, पिता देव है, आचार्य और अतिथिदेव है। इनके देव होने में किसी को संदेह नहीं। पाँचवा देव पत्नी के लिए पति है और पति के लिए पत्नी भी देवी है। इन पाँच की पूजा-सत्कार का विधान सर्वत्र है और व्यावहारिक भी है। देव का सीधा अर्थ होता है देने वाला/ माता-पिता हमें जीवन देते हैं, जीवन के विविध संसाधन व आशीर्वाद देते हैं। आचार्य और अतिथि हमें ज्ञान देते हैं, धर्म-उपदेश देते हैं। पति-पत्नी तो अपना तन, मन, धन और जीवन ही एक दूसरे को दे डालते हैं। ऐसे देवी-देवताओं की श्रद्धा व सम्मान पूर्वक पूजा-सत्कार और सद्व्यवहार करना ही सर्वमान्य और सच्ची देव-पूजा है। यज्ञ का तो एक नाम ही 'देवपूजन' है। प्राकृतिक देवों- पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश की पूजा (शुद्धि) यज्ञ से ही होती है। आर्य समाज जीवन से जुड़े हुए इन देवों की पूजा करता-कराता है। ऐसे देव-पूजक आर्य समाज को देवी-देवताओं की पूजा का विरोधी कहने वाले विचार करके देखें तो उनका स्वयं का हृदय कह उठेगा कि वे स्वयं इन सच्चे देवों की पूजा न करने के कारण देव पूजा से वंचित है।

3. भ्रान्ति- कुछ लोग कहते हैं कि आर्य समाज श्रीराम और श्रीकृष्ण, हनुमान आदि को नहीं मानता।

सच्चाई- श्रीराम और श्रीकृष्ण आदि के कल्पित चित्र व मूर्ति बनाकर, उन पर फल-फूल, चावल, मिष्ठान्न चढ़ाना ही श्रीराम, श्रीकृष्ण आदि का मानना है तो आर्य समाज उन्हें नहीं मानता। दूसरी ओर बाल्मीकि रामायण और महाभारत में वर्णित उनके इतिहास को पढ़कर उनके प्रति श्रद्धा और सम्मान के भाव रखते हुए, उनके श्रेष्ठ गुण, कर्म, स्वभाव के अनुसार अपने गुण, कर्म, स्वभाव बनाना यदि उनका मानना है तो सच यह है कि श्रीराम और श्रीकृष्ण आदि को आर्य समाज ही मानता है। महर्षि बाल्मीकि ने रामायण लिखने का उद्देश्य बताया है 'रामादिवत् प्रवर्तितव्यं न तु रावणादि वत्।' अर्थात् मैं आने वाली पीढ़ियों को यह संदेश देना चाहता हूँ कि वे श्रीराम और श्रीकृष्ण के चित्र की पूजा नहीं करते बल्कि चरित्र की करते है, जो सबको करनी चाहिए।

4. भ्रान्ति- एक भ्रान्ति यह है कि आर्य समाज श्राद्ध व तर्पण नहीं मानता।

सच्चाई- आर्य समाज हर उस चीज को मानता है, जो सच हो, मानव जीवन के लिए उपयोगी हो। तर्क और विज्ञान से युक्त, वैदिक धर्म के हर तत्त्व को आर्य समाज मानता है। आँख बंद करके बिना जाने व समझे किसी बात को मान लेना बुद्धिमत्ता नहीं। श्राद्ध शब्द श्रद्धा से बनता है। सत्य को धारण करने की हमारी आन्तरिक सामर्थ्य को श्रद्धा कहते हैं। प्रचलित श्राद्ध परम्परा, सत्य की कसौटी पर खरी नहीं उतरती। मर चुके अपने माता-पिता, दादा-दादी के नाम पर वर्ष में एक बार पण्डितों को भोजन खिला देना अधिक अच्छा है या जीवित माता-पिता, दादा-दादी की श्रद्धापूर्वक सेवा करना अधिक अच्छा श्राद्ध है। आर्य समाज जीवित माता-पिता, दादा-दादी आदि की सम्मान पूर्वक सेवा करके संतुष्ट करने को सच्चा श्राद्ध मानता है व करता है। तर्पण का तात्पर्य तृप्ति यानी संतुष्टि होता है जिसको आर्य समाज वृद्धों की सेवा करके उन्हें संतुष्ट करना मानता है।

5. भ्रान्ति- तीर्थों को न मानने का दोष भी आर्य समाज पर लगाते हैं।

सच्चाई- तीर्थ शब्द का अर्थ होता है, दुःखों से तारने वाले कर्म। जैसे सत्य बोलना, विद्या का अभ्यास करना, संध्या करना, उत्तम विचार रखना, धर्मानुष्ठान, परमात्मा की भक्ति, ब्रह्मचर्य का पालन करना तथा विद्यादान आदि कर्म, संसार सागर से तारने वाले कर्म होने से तीर्थ कहलाते हैं। वेद कहता है- उपह्वरे च गिरीणां संगमे च नदीनाम् धिया विप्रो अजायतः। अर्थात् पहाड़ों की गुफाओं और नदियों के किनारे रहकर संत-महात्मा योगाभ्यास किया करते हैं। ऐ तपस्वी साधुओं के निकट जाकर प्राचीन काल में लोग सत्संग व शंका समाधान किया करते थे। अब वहां न तो तपस्वी सन्यासी हैं और न धर्म चर्चा के लिए जाने वाले तीर्थयात्री। आर्य समाज सत्य बोलना, विद्या पढ़ना, ब्रह्मचर्य के पालन आदि उत्तम धर्मों को सच्चा तीर्थ मानता है और इससे कोई बुद्धिमान व्यक्ति इन्कार भी नहीं कर सकता।

खुशहाल चन्द आर्य, कोलकाता

मेरी सफलता है इस बात में नहीं है कि ए या बी मेरे बारे में क्या सोचता है। मेरी सफलता इस बात में है कि में अपने काम से क्या कर दिखाता हूं। शिक्षा हमारो इसी दिशा में मार्गदर्शन करती है।- होमी जहांगीर भाभा, वैज्ञानिक

thearyasamaj.org

डाक पंजियन सं. RJ / JPC / FN-221 / 2014 - 2016 / आर. एन. आई नं. 10471/60

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान की ओर से लोकसभा निर्वाचन- 2014 में निर्वाचित आर्य महानुभावों को हार्दिक शुभकामनाएँ

स्वामी सुमेधानन्द जी
(सीकर, राज.)

जन. वी. के. सिंह
(गाज़ियाबाद, उ.प्र.)

डॉ. हर्षवर्धन
(चांदनी चौक, दिल्ली)

डॉ. सत्यपाल सिंह
(बागपत, उ.प्र.)

श्री अश्विनी चोपड़ा
(करनाल, हरियाणा)

श्री प्रवेश वर्मा
(पश्चिमी दिल्ली)

श्रीमती मीनाक्षी लेखी
(नई दिल्ली)

रमेश विधूड़ी
(दक्षिण दिल्ली)

डॉ. सुनील गायकवाड़
(लातुर, महाराष्ट्र)

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान की ओर से
भारतीय पर्व दशहरा एवं दीपावली की

हार्दिक शुभकामनाऐं

यह पर्व आप सभी के लिए मंगलमय हो।

आर्य समाज प्रचार समिति, अलवर द्वारा मासिक यज्ञ

आर्य समाज प्रचार समिति के तत्वावधान में एवं श्री ज्ञान प्रकाश मित्तल जी के सौजन्य से प्रचार समिति का मासिक यज्ञ 28 सितम्बर 2014 को शिवाजी पार्क में 3 क-94 के सामने स्थित पार्क में सम्पन्न हुआ। सर्व प्रथम श्री धर्मेन्द्र शास्त्री जी (पुरोहित) ने यज्ञ कार्य सम्पन्न कराया। तत्पश्चात बहिन ईश्वरी देवी शर्मा एवं उनके सहयोगियों ने सामुहिक स्वरों में ईश वन्दना तथा भजन प्रस्तुत किये। इसके उपरान्त श्री धर्मेन्द्र शास्त्री जी ने यज्ञ के महत्व पर प्रकाश डालते हुए यज्ञ हमारे जीवन में क्यों आवश्यक है! अर्थात् उसकी उपयोगिता पर विचार व्यक्त किये। अन्त में श्री अमरमुनि जी ने अपने यज्ञ एवं वेदों के महत्व पर प्रकाश डाले। उन्होंने कहा कि वेद हमारी भारतीय संस्कृति के सुस्पष्ट भाष्य है। ईश्वर ने वेद मानव जाति को प्रदान किया है। उन्होंने बताया कि ब्रह्मा से लेकर स्वामी दयानन्द तक ऋषि मुनियों के सामुहिक ज्ञान विज्ञान का श्रेष्ठतम अविष्कार व निष्कर्ष यज्ञ है। इस अवसर पर लगभग सौ से अधिक श्रद्धालु आर्यजन उपस्थित थे। – बृजेन्द्र देव आर्य, मंत्री

विश्व शाकाहार दिवस पर रेली निकाली जिसमें मांस निर्यात एवं कत्लखानों को दी जाने वाली छूट के विरोध में प्रधानमंत्री भारत सरकार को ज्ञापन

दिनांक 1 अक्टूबर 2014 को अलवर की अहिंसा में विश्वास करने वाल संगठन – आर्य समाज, जैन नवयुग समिति, जैन समाज, बंधुआ मुक्ति मोर्चा, मानव उत्थान समिति, सृष्टि सेवा संस्था आदि के द्वारा भारत सरकार के प्रधानमंत्री से सम्पूर्ण कत्लखाने बंद करने तथा मांस निर्यात बंद करने एवं धर्म के नाम पर पशु बलि पर रोक की मांग करते हुए अलवर जिले के जिलाधीश महोदय के द्वारा मांग की गई।

यह रेली अहिंसा सक्रिल, आर्य समाज अलवर से जुलूस के रूप में रवाना होकर जिलाधीश महोदय के कार्यालय गई जिसमें हजारों विद्यार्थी एवं शहर के प्रबुद्ध नागरिकों ने भाग लिया। इस रेली में सर्व श्री अमर मुनिजी, खिल्लीमल जैन, ज्ञानदेव आहूजा, प्रदीप आर्य, राजेश याज्ञिक, बृजेन्द्र देव आर्य, कृष्ण कुमार अदलखा, ललित वेनीवाल, सुनील आर्य, बच्चूसिंह जैन, महेश जैन, धर्मचंद जैन, धर्मेन्द्र आर्य ब्रह्मचारी, रेणु गुप्ता, शाकाहार समिति के ओमप्रकाश गुप्ता, धरणेन्द्र जैन, सरला जैन, आशा जैन आदि आदि विशिष्ट महानुभावों ने भाग लिया। – राजेश याज्ञिक

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान राजा पार्क जयपुर के लिये राज प्रिन्टर्स एसोसियेट्स बेसमेंट, 45, परनामी मन्दिर जयपुर द्वारा मुद्रित।
सम्पादक एवं प्रकाशक अमरसिंह आर्य, मंत्री- आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान।

प्रेषक :
सम्पादक, आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान
राजा पार्क, जयपुर - 302004
यूको बैंक A/c No. : 18830100010430 तिलक नगर, जयपुर

प्रेषित

विशेष – आर्य मार्तण्ड में प्रकाशित लेखों मे व्यक्त विचार लेखकों के अपने है। उनसे संम्पादक की सहमति आवश्यक नहीं है।